वेल्थी फ़िशर

चुना साक्षरता का मिशन

अंजुम नईम

भारत में साक्षरता आंदोलन का इतिहास वेल्थी होन्सिंगर के योगदान का जिक्र किए बिना अधूरा ही रहेगा। उन्होंने अपने दृढ़ निश्चय और प्रतिबद्धता के जरिये हज़ारों लोगों के जीवन में बदलाव लाने में सफलता हासिल की।

रोम, न्यू यॉर्क में 1879 में जन्मी सुश्री होन्सिंगर ने वर्ष 1900 में सिराक्यूज यूनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल की। इसके बाद उन्होंने अध्यापिका के रूप में अपनी सेवाएं देना शुरू कर दिया। लेकिन छह साल के अंदर ही उन्हें मेथोडिस्ट चर्च मिशनरी के बतौर चीन भेज दिया गया। वहां वह नान्चंग में एक स्कूल की प्रिंसिपल बन गईं। लेकिन फिर उनका भारत से बुलावा आ गया। वर्ष 1924 में उन्होंने फ्रेड फ़िशर से विवाह किया जो मेथोडिस्ट पादरी थे और आगरा में कार्यरत थे। फ़िशर दंपत्ति भारत के आज़ादी के आंदोलन से जुड़े महत्वपूर्ण नेताओं से अच्छी तरह परिचित थे। अपनी बहुतायत में की गई यात्राओं के कारण वे इस बात को मानते थे कि लोगों के जीवन में बदहाली का कारण गरीबी और अशिक्षा थी।

वर्ष 1938 में फ़िशर के पति की डेट्रॉइट, मिशिगन में मृत्यु हो गई। लेकिन उन्होंने उनके काम को जारी रखने का फैसला किया। वह वर्ष 1947 में भारत लौटीं और एक बार फिर मोहनदास कर्मचंद गांधी से मुलाकात की। गांधी जी ने सुश्री फ़िशर को सलाह दी कि यदि वह भारत में शिक्षा का विस्तार करना चाहती हैं तो उन्हें गांवों में काम करना चाहिए। उन्होंने अपनी हत्या से छह सप्ताह पहले अंतिम मुलाकात में सुश्री फ़िशर को अपनी यह सलाह फिर दोहराई।

साभार: लिट्रेसी हाउस

फ़िशर को शैक्षिक कार्यकर्ता के बतौर अच्छी तरह जाना जाता था। वर्ष 1952 में इलाहाबाद एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट के प्रधानाचार्य डॉ. ऑर्थर टी. मोशर ने उनसे इलाहाबाद आने और वहां सरकार द्वारा चयनित कुछ लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए कहा। ऐसे प्रशिक्षित लोगों को फिर ग्रामीण शिक्षकों को प्रशिक्षित करना था।

इलाहाबाद में उन्होंने एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट के छोटे से भवन में 40 लोगों के साथ अपना प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया। यही कदम बाद में चलकर लिट्रेसी हाउस के रूप में सामने आया। यह ऐसा प्रयास था जिसमें

ऊपर: वेल्थी फ़िशर
नीचे बाएं: लिट्रेसी हाउस के प्रार्थना कक्ष में प्रशिक्षणार्थी और कर्मचारी।
नीचे दाएं: प्रशिक्षणार्थी और कर्मचारी लिट्रेसी हाउस के बगीचे में काम करते हुए।

फोटो: राजेश कुमार सिंह

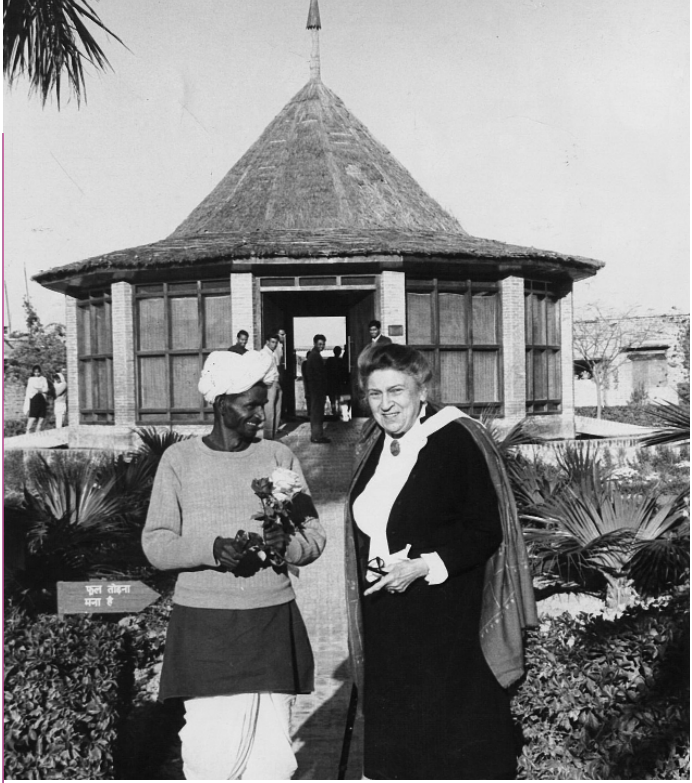

साभार: लिट्रेसी हाउस

1958 में लिट्रेसी हाउस के प्रार्थना कक्ष के बाहर वेल्थी फ़िशर एक माली से बातचीत करते हुए।

अनौपचारिक स्कूल के तहत शिक्षा के साथ-साथ कामकाजी प्रशिक्षण भी दिया जाता था। सुश्री फ़िशर ने अपना पूरा कामकाज चार हिस्सों में बांटा। साक्षरता, पारिवारिक जीवन, खाद्यान्न उत्पादन और लोगों के मन से डर दूर करना।

वर्ष 1954 के शुरुआत में एक साल तक काम करने के बाद ही इस कार्यक्रम को वित्तीय संकट के कारण जारी रखना मुश्किल हो गया। लेकिन फ़िशर ने चुनौतियों से जूझने की ठानी। उन्होंने इलाहाबाद एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट के पास ही एक पुराना गैरेज किराए पर लिया और उसके बरामदे में प्रशिक्षण देने लगीं। वह अमेरिका गईं और वर्ल्ड लिट्रेसी इनकॉर्पोरेशन के न्यासियों को अपनी योजना के बारे में समझाया जिससे उन्हें अपने मिशन को जारी रखने के लिए 45 हज़ार डॉलर मिले।

भारत आने के बाद फ़िशर से उत्तर प्रदेश के तत्कालीन गवर्नर के. एम. मुंशी ने आग्रह किया कि वह अपना लिट्रेसी हाउस लखनऊ ले जाएं। उन्होंने इसके लिए चार एकड़ का भूखंड दिया और सितंबर 1956 में लिट्रेसी हाउस वहां चला गया। नए मुख्यालय में शिक्षकों का प्रशिक्षण शुरु हो गया। लेकिन शिक्षा मिशन को गांव-गांव तक कार्यकर्ता ले गए जो पुस्तिकाओं से भरे बक्से लेकर साइकिलों पर गांव-गांव जाते। ये पुस्तिकाएं उधार दी जातीं और कुछ दिनों के बाद इन्हें वापस ले लिया जाता। इस काम के लिए अमेरिका की ग्रीनविच वीमेन ऑफ़ कनेटिकट ने एक वैन दान में दी। इससे शिक्षा मिशन से जुड़े कार्यकर्ताओं को दूरदराज के गांवों तक जाने में मदद मिली। फ़िशर भी अक्सर इस काफ़िले के साथ होतीं।

इस बीच लिट्रेसी हाउस ने बड़े पैमाने पर खुद ही किताबें लिखवाईं और वितरित कीं। हर पखवाड़े एक न्यूज़लेटर का भी प्रकाशन शुरू किया गया जिसका नाम था उजाला। इसे पुस्तकालयों और शिक्षा किट के जरिये वितरित किया जाता था। कार्यकर्ताओं को फंक्शनल साक्षरता कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित किया जाता था जिससे कि वे अन्य लोगों को प्रशिक्षित कर सकें। पारिवारिक जीवन शिक्षा का विभाग भी स्थापित किया गया जिससे कि ग्रामीण महिलाएं और लड़कियां खुद की मदद कर सकें।

वर्ष 1958 में जब भारत सरकार पंचायती राज्य आंदोलन का विस्तार करना चाहती थी तो लिट्रेसी हाउस को ग्रामीण प्रमुखों और ब्लॉक विकास समितियों के सदस्यों के प्रारंभिक प्रशिक्षण का ज़िम्मा सौंपा गया। इसके कामकाज से प्रभावित होकर सरकार ने इसे राज्य के रिसॉर्स सेंटर के रूप में मान्यता दे दी।

फ़िशर को वर्ष 1964 में रैमन मैगसायसाय पुरस्कार भी मिला जो एशिया में विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को मिलता है। उन्होंने इसमें मिली 10 हज़ार डॉलर की राशि को 16 हैक्टेयर के दो फ़ार्म खरीदने के लिए दान दे दिया जिससे कि साक्षरता के साथ-साथा कृषि और पशुपालन के बारे में कक्षाएं शुरू हो सकें।

आज लिट्रेसी हाउस एक प्रमुख प्रौढ़ शिक्षण एवं शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र है। इसका कामकाज आज भी उसी तरह चलता है जैसा सुश्री फ़िशर के जमाने में चलता था। प्रशिक्षणार्थी सरकार या अन्य द्वारा प्रायोजित होते हैं और वे पूरे भारत से लिट्रेसी हाउस आते हैं। इनमें शिक्षक, स्कूलों के उप पर्यवेक्षक , सामाजिक कार्यकर्ता, जिला कल्याण कार्यकर्ता, गृह विज्ञान के बारे में जानकारी देने वाले, सहकारिता कर्मचारी, ब्लॉक विकास पर्यवेक्षक, स्वास्थ्य कार्यकर्ता और धार्मिक अगुआ शामिल हैं।

अपने काम से रिटायर होने के बाद फ़िशर ने अपना अपना ज़्यादतर समय साउथबरी, कनेटिकट में अपने पुरखों के घर में बताया। उन्होंने आखिरी बार 1980 में 101 साल की उम्र में भारत की यात्रा की। घर लौटने के कुछ माह बाद उनकी मृत्यु हो गई।

उनके साथ काम करने वाले एक कार्यकर्ता मुश्ताक परदेशी बताते हैं कि वह अक्सर कहा करती थीं, ''अंधेरे को दोष देने से ज्यादा अच्छा है कि एक मोमबत्ती जलाई जाए। उन्होंने एक लैम्प जलाया और लैम्प जलाने का यह सिलसिला एक के बाद एक अब तक जारी है।''

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजें।